वार्तालाप-630, विजयविहार, दिल्ली, भाग-1, दिनांक 16.09.08
Disc.CD No.630, dated 16.09.08 at Vijayvihar, Delhi, Part-1
Part-1

समयः 00.01-00.42

बाबाः टाइम थोड़ा है। (किसी ने कुछ पूछा।) जोर से बोलिये। (किसी ने कुछ पूछा।) हँ? जोर से बोलिये।

जिज्ञासुः पढ़े हुए नहीं हैं।

बाबाः पढ़े हुए नहीं हैं? हाँ।

जिज्ञासुः हम लिखे नहीं कुछ पोतामेल।

बाबाः पोतामेल नहीं लिखते? कोई बात नहीं। दूसरों से लिखवा लो। कोई अच्छा अज़ीज़ आदमी हो आपका नज़दीकी उससे लिखवा लो।

Time: 00.01-00.42
Baba: The *time* is less. (Someone asked something.) Speak loudly. (Someone asked something.) Hm? Speak loudly.
Student: I am not literate.
Baba: Are you not literate? Yes.
Student: I didn't write a *potamail.*
Baba: You don't write *potamail*[1]? It doesn't matter. Have it written from others. Have it written from someone who is good and dear to you.

समयः 00.46-05.28

जिज्ञासुः बाबा, पोतामेल देने की जो बात कर रहे है, वो साकार को दिया जाता है। प्रजापिता ने अपना पोतामेल किसको दिया?

बाबाः प्रजापिता ने तुम्हारे से पहले ही पोतामेल दे दिया होगा सारा।

जिज्ञासुः कब?

बाबाः जब आया होगा ज्ञान में, बेसिक में ही। (जिज्ञासु: क्लास टीचर को दिया था?) जब बेसिक में दिया होगा तो उस समय वो स्टूडेन्ट था या टीचर था? बेसिक में टीचर था या स्टूडेन्ट था? स्टूडेन्ट था। और बाप का बच्चा था। उसका बाप साकार में कौन था? अरे बाप का प्रत्यक्षता वर्ष तो सन् 76 हुआ। प्रत्यक्ष होने से पहले वो किसका बच्चा था? बाप तो आकरके ब्राह्मणों को पढ़ाई पढ़ाते हैं। शूद्रों को तो नहीं पढ़ाते।

Time: 00.46-05.28
Student: Baba, in case of giving the *potamail*, it is given to the corporeal one. Whom did Prajapita give his *potamail*?
Baba: Prajapita will have given his entire *potamail* before you.
Student: When?
Baba: When he had entered [the path of] knowledge, in the *basic* [knowledge] itself. (Student: Did he give it to the class teacher?) When he will have given it in the basic [knowledge], was he a

[1] A letter to Baba containing the account of the secrets and weaknesses of one's body, mind and wealth

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

student or a *teacher* at that time? Was he a *teacher* or a *student* in basic [knowledge]? He was a *student*. And he was the Father's child. Who was his Father in corporeal form? *Arey*, the year of revelation of the Father was the year 76. Whose child was he before being revealed? The Father comes and teaches the Brahmins. He certainly does not teach the *Shudras*[2].

हमारी तो डबल मशीनरी है। हम शूद्रों को ब्राह्मण भी बनाते हैं और फिर ब्राह्मणों को बाप पढ़ाई पढ़ाकरके देवता बनाते हैं। तो बाप का प्रत्यक्षता वर्ष 76 से मनाया गया। बाप आते हैं तो ब्राह्मणों को पढ़ाते हैं। और ब्राह्मण बनाए जाते हैं ब्रह्मा द्वारा। तो 76 से पहले जो भी ब्राह्मण थे उन ब्राह्मणों का टीचर कौन था साकार में? (जिज्ञासु - ब्रह्मा।) ब्रह्मा बाबा। ब्रह्मा में शिव प्रवेश करते हैं माता के रूप में पढ़ाई पढ़ाने के लिए। शूद्रों को ब्राह्मण बनाया जाता है। तो प्रजापिता भी पहले क्या था? पहले-पहले ब्राह्मण रहा होगा या शूद्र ही रहा होगा? हँ? (जिज्ञासु - शूद्र।) शूद्र ही होगा। ब्रह्मा का बच्चा बनता है तब ब्राह्मण कहा जाता है। क्योंकि ये अगला जन्म है ना। नया जन्म होता है, ब्राह्मणों का दूसरा जन्म होता है तो भी शूद्रों के यहाँ होता है या ब्राह्मणों के यहाँ होता है? ब्राह्मण तो बच्चे पैदा करेंगे ही नहीं। कहाँ जन्म होता है? शूद्रों में जन्म होता है। तो शूद्रों को ब्राह्मण कौन बनाए? बाप तो आया नहीं था। बाप का प्रत्यक्षता वर्ष हुआ ही नहीं। तो जरूर कहेंगे कि ब्रह्मा जो टाइटिलधारी था प्रजापिता का, प्रजापिता का टाइटल ब्रह्मा को मिला हुआ था। ओरिजिनल प्रजापिता नहीं था। उस प्रजापिता ब्रह्मा का बच्चा बना, स्टूडेन्ट बना। तो पोतामेल तो देना पड़े ना। (जिज्ञासु: इस जन्म में तो बाबा, दादा लेखराज से तो मिले नहीं ना ।) तो? कोई को निमित्त नहीं बनाया? संस्था उड़ गई क्या? निमित्त टीचर्स होते हैं। और?

Ours is the *double machinery*. We also transform the *Shudras* into Brahmins and then the Father teaches the knowledge to the Brahmins and makes them into deities. So, the year of revelation of the Father was celebrated in 76. When the Father comes, He teaches the Brahmins. And Brahmins are created through Brahma. So, who was the *teacher* in corporeal form for all the Brahmins who existed before 76? (Student: Brahma.) Brahma Baba. Shiva enters Brahma, in order to teach in the form of a mother. The *Shudras* are made into Brahmins. So, what was Prajapita too in the past? Will he have been a Brahmin or a *Shudra* earlier? (Student: A *Shudra*.) He will certainly have been a *Shudra* . He is called a Brahmin only when he becomes the child of Brahma because this is the next birth, isn' it? Even when someone is newly born, when the Brahmins are born for the second time, are they born in the family of *Shudras* or in the family of Brahmins? Brahmins will not at all give birth to children. Where are they born? They are born in the family of *Shudras*. So, who will change the *Shudras* into Brahmins? The Father had not come [at that time]. The Father's year of revelation didn't take place at all. So, definitely, it will be said that Brahma who was the titleholder of Prajapita; Brahma had received the *title* of Prajapita. He wasn't the *original* Prajapita. He (the soul of Ram) became the child, the *student* of that Prajapita Brahma. So, he will certainly have to give the *potamail*, will he not? (Student: But Baba didn't meet Dada Lekhraj in this birth, did he?) Then? Did he not make anyone instrument? Did the institution vanish? There are *teachers* who are instruments (*nimitt*).

[2] Untouchable; member of the fourth and lowest division of the Indo-Aryan society

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

समयः 05.34-08.44

जिज्ञासुः बाबा, संगमयुगी महालक्ष्मी महानारायण जाकर त्रेता में राम-सीता बनेंगे ना। दुबारा जनम सतयुग में...?

बाबाः जो भी लक्ष्मी-नारायण होते हैं, चाहे लक्ष्मी-नारायण दि फर्स्ट हों, चाहें सेकण्ड हों, चाहे थर्ड हों वो उत्तरोत्तर अगले जन्मों में नीचे उतरते जाते हैं। ऐसे नहीं हर जनम में लक्ष्मी-नारायण बनेंगे। लक्ष्मी-नारायण के राज्य अधिकारी बनते जावेंगे। फिर नीचे उतरते जावेंगे। नीचे उतरते-उतरते प्रजा पद में भी जा सकते हैं। जैसे राम वाली आत्मा के लिए गाया हुआ है - राम राजा राम प्रजा राम साहूकार। तो सतयुग के अंतिम जनम में जाकर वो नारायण के राज घराने में भी नहीं पैदा होता है। राजपरिवार में कोई पद नहीं पाता आठवें नारायण के यहाँ प्रजावर्ग में जाकरके जन्म होता है। ऐसे ही सभी नारायणों का हिसाब है। उत्तरोत्तर अगले जन्मों में नीचे गिरते जावेंगे। फिर जो नारायण बनते हैं या जिस नंबर के नारायण बनते हैं उसी नंबर के राम-सीता बनेंगे। जो संगमयुगी नारायण है तो त्रेता में जाके पहला राम (सीता) बनेगा क्योंकि जो पहले-पहले फेल हुआ वो पहले-पहले राम बने। और फेल तो सभी होते हैं। माया किसी को छोड़ती नहीं है। कोई पहले फेल होते हैं कोई बाद में फेल होते हैं।

Time: 05.34-08.44

Student: Baba, the Confluence Age *Mahalakshmi-Mahanarayan* will become Ram and Sita in the Silver Age, will they not? When they are reborn in the Golden Age…

Baba: All those who are Lakshmi-Narayan, whether it is Lakshmi-Narayan *the first*, whether it is the *second*, whether it is the *third*, they degrade in the following births successively. It is not that they will become Lakshmi and Narayan in every birth. They will keep becoming the royal officials (*rajya adhikaari*) of Lakshmi-Narayan. Then they will continue to fall. While falling, they can also go in the subject category. For example, it is famous for the soul of Ram: Ram [is] the king, Ram [is] a subject [and] Ram [is] a prosperous person. So, he is not even born in the royal family of Narayan in the last birth of the Golden Age. He does not get any post in the royal family of the eighth Narayan. He is born in the subject category. Similar is the case with all the Narayans. They will go on experiencing downfall in the successive births. Then those who become Narayan or [whoever] becomes [Lakshmi and] Narayan at whichever *number* (rank), they will become Ram and Sita at the same *number* (rank). The Confluence Age [Lakshmi and] Narayan will go and become the first Ram [and Sita] in the Silver Age because the ones who failed first of all should become the first Ram [and Sita]. And everyone does *fail*. Maya doesn't spare anyone. Some *fail* first and some *fail* later on.

कृष्ण की आत्मा दादा लेखराज, वो भी सन् 68 में फेल हो गए, हार्ट फेल हो गया। नहीं तो बोला है योगियों का हार्ट फेल नहीं हो सकता। तो जो सतयुग का पहला नारायण है वो ही फेल हो जाता है तो दूसरे, तीसरे, आठवें नारायण क्यों नहीं फेल होंगे? फेल होते हैं। तो जिस नंबर में फेल होते हैं उसी नंबर के राम-सीता बन जाते हैं।

The soul of Krishna, i.e. Dada Lekhraj also failed in the year 68; he had a *heart* failure. Otherwise it has been said that the yogis cannot have a *heart* failure. So, when the first Narayan of the

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Golden Age himself fails then why the second, third, eighth Narayan won't *fail*? They *fail*. So, the *number* at which they *fail*, they become Ram and Sita of the corresponding *number*.

समयः 08.49-09.08

जिज्ञासुः बाबा, नटशैल क्या है?

बाबाः नटशैल माना शार्ट में, थोड़े में समझाओ। (एक होता है) विस्तार में समझाना। और थोड़े में समझाना माना नटशैल में समझाना।

Time: 08.49-09.08
Student: Baba, what is meant by nutshell?
Baba: *Nutshell* means 'in *short'*. Explain in brief. [One is] to explain in detail and [one is] to explain in brief, i.e. to explain in a *nutshell*.

समयः 09.11-23.13

जिज्ञासुः बाबा, 2004 में शूटिंग जब सभी समाप्त हो गई है, तो इसके बाद कौनसी शूटिंग चल रही है अभी ब्राह्मणों की दुनिया में?

बाबाः जैसे 1936 से 1947 तक जब तक स्वर्ग का मॉडल तैयार हुआ और ब्रह्मा में शिव की प्रवेशता साबित हुई तब तक 10 साल में ब्रह्मा को किसी ने नहीं जाना क्योंकि ब्रह्मा नाम पड़ता ही तब है जब शिव बाप प्रवेश करें। मुरली में आया है कि कराची से मुरली निकलती चली आई। कराची में तो बाद में आए। पहले तो कलकत्ते से शुरुआत हुई और सिंध, हैदराबाद तक सत्संग चलता रहा। पहले बाबा मुरली नहीं चलाते थे। 10-12 पेज बैठकरके लिखते थे। बाप लिखाते थे। माना ब्रह्मा बाबा लिखते थे और शिवबाप कोई में प्रवेश करके लिखाते थे। फिर उसकी कापियाँ निकलती थीं। पढ़करके सुनाते थे। इससे साबित हुआ कि कराची से मुरली निकलती चली आई है ब्रह्मा के तन में जब सिंध, हैदराबाद से ढ़ेर की ढ़ेर भाग के कराची में पहुँच गई बाबा के पास। हिन्दुस्तान-पाकिस्तान की लड़ाई हुई, बंटवारा हुआ। उस समय की बात है 1947 की।

Time: 09.11-23.13
Student: Baba, in 2004, when the entire shooting is over, which shooting is taking place now in the world of Brahmins?
Baba: For example, from 1936 to 1947, when the *model* of heaven became ready and the entrance of Shiva in Brahma was proved, nobody recognized Brahma in [those] 10 years because the name Brahma is given only when the Father Shiva enters. It has been mentioned in the murli: the murlis have started since [the days of] Karachi. They came to Karachi later on. At first, the *satsang* (gathering) started from Calcutta and it continued till the days of Sindh Hyderabad. [It is said in the murli:] 'Earlier Baba did not use to narrate the murlis. He sat and wrote 10-12 pages. The Father made him write them.' It means that Brahma Baba used to write and the Father Shiva entered someone and made him write. Then copies of it were issued [and] read out. It proves that the murlis have started from [the days of] Karachi through the body of Brahma, when many [virgins and mothers] ran away from Sindh Hyderabad and reached Baba's place in Karachi. A war took place between Hindustan (India) and Pakistan; partition [of India] took place. It is about that time, of 1947.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

तो 1947 में ब्रह्मा प्रत्यक्ष हुआ। और सबके सामने इकट्ठा प्रत्यक्ष हुआ होगा या नंबरवार ने पहचाना होगा? (जिज्ञासु - नंबरवार।) नंबरवार ने पहचाना। नाम बाहर प्रत्यक्ष तब हुआ जब दिल्ली में कमलानगर सेन्टर खुला और उसका नाम डाला गया ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय। तो ब्रह्मा को प्रत्यक्ष होने में कितने साल लग गए? माँ, ब्रह्मा या बड़ी माँ, जगत की माँ ये पहला पार्टधारी है। त्वमेव माता च पिता त्वमेव। ये नहीं कहा जाता त्वमेव पिता, टीचर, ये नाम पहले नहीं लिया जाता। बच्चे पैदा होते हैं तो पहले माता से ही जन्म लेते हैं, माता से ही पालना लेते हैं, माता से ही पढ़ाई पढ़ते हैं। ये भी बेहद की ब्राह्मणों की जेनरेशन है। माँ को प्रत्यक्ष होने में 1936-37 से लेकरके 1951-52 तक कितने साल हुए? 16-17 साल तो हो गए कि नहीं? तो पहलू मूर्ति को प्रत्यक्ष होने में 16-17 साल हो गए। फिर दूसरी मूर्ति कौनसी काम करती है? ब्रह्मा के बाद। तीन मूर्तियाँ हैं ना। ब्रह्मा की मूर्ति, विष्णु की मूर्ति, शंकर की मूर्ति। ब्रह्मा की मूर्ति तो प्रत्यक्ष हुई। फिर दूसरी मूर्ति कौनसी प्रत्यक्ष होती है? शिव तो निराकार है। उनका नाम है शिव है बिन्दी का नाम है। लेकिन मूर्ति तो चाहिए। कौनसी मूर्ति प्रत्यक्ष हुई? शंकर मूर्ति प्रत्यक्ष हुई।

So, Brahma was revealed in 1947. And would he have revealed in front of everyone at the same time or would they have recognized him number wise (sooner or later)? (Student: Numberwise.) They recognized him number wise. The name was revealed outside (in the world) when the Kamalanagar *Center* was opened in Delhi and it was named Brahmakumari Ishwariya Vishwa Vidyalaya. So, how many years did it take for Brahma to be revealed? Mother, Brahma or the senior mother, the mother of the world, is the first actor. *Twamev mata ca pita twamev* (You alone are my mother and father.) It is not said that you are my father [or] *teacher*. These names are not uttered first. When children are born, then at first, they are born from the mother, they receive sustenance from the mother [and] they study from the mother herself. This is also an unlimited *generation* (population) of Brahmins. From 1936-37 to 1951-52, how many years did it take for the mother to be revealed? Did it take 16-17 years or not? So, it took 16-17 years for the first personality to be revealed. Then what task does the second personality perform? After Brahma ... There are three personalities, aren't there? Brahma's personality, Vishnu's personality [and] Shankar's personality. Brahma's personality was revealed. Then which is the second personality that is revealed? Shiva is indeed incorporeal; His name is Shiva; it is the name of a point. But a personality (*murti*) is certainly required. Which personality was revealed? Shankar's personality was revealed.

तो शंकर मूर्ति को प्रत्यक्ष होने के लिए कितना टाइम चाहिए? 16-17 साल का ही चाहिए या कम चाहिए? अरे कोई मकान का फाउण्डेशन डाला जाता है तो पहली मंजिल बनाने में, फाउण्डेशन डालने में ज्यादा टाइम लगता है। इसलिए पहली मूर्ति को प्रत्यक्ष होने में 16-18 साल लग गए। तो दूसरी मूर्ति है शंकर। बाबा कहते भी हैं - समझाओ तो सीधा मत समझाओ। ब्रह्मा द्वारा स्थापना, विष्णु द्वारा पालना, शंकर द्वारा विनाश। नहीं। ये रांग है। पहले ब्रह्मा द्वारा स्थापना, फिर शंकर द्वारा जो स्थापना हुई है ब्राह्मणों की -कच्चे-पक्कों की - उन कच्चे-पक्के ब्राह्मणों का विनाश। थोड़े भी कच्चे हैं, थोड़े पक्के हैं और ज्यादा कच्चे हैं तो भी विनाश। चाहे वो बेसिक के हों, चाहे एडवांस के हों। इतने ढ़ेर के ढ़ेर थोड़ेही नई दुनिया में जावेंगे। नई

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

दुनिया में फुल पास होने वालों का फाउण्डेशन होना चाहिए या थोड़ी सज़ाएं खाने वालों का फाउण्डेशन होना चाहिए? (जिज्ञासु - फुल पास।) फुल पास होने चाहिए। तो बहुत थोड़ी जनसंख्या होगी नई दुनिया की। तो टाईम लगता है। दूसरी मूर्ति को प्रत्यक्ष होने में कितना टाइम चाहिए फिर? आठ साल तो जरूर चाहिए। तो सन् 69 से वो दूसरी मूर्ति ब्राह्मण बनती है। शूद्र से ब्राह्मण। उस ब्राह्मण को भी मूर्ति के रुप में प्रत्यक्ष होने के लिए टाइम चाहिए 8-9 साल। तो सन् 77 हुआ संपूर्णता वर्ष। कितने साल हुए? 69 से 77 तक कितने साल हुए? (जिज्ञासु - 8 साल।) 8-9 साल हो गए।

So, how much time is required for the personality of Shankar to be revealed? Is a period of 16-17 years required or is a smaller period required? *Arey*, when the *foundation* for a house is laid, more *time* is required to build the first floor, to lay the *foundation*. This is why it took 16-18 years for the first personality to be revealed. So, the second personality is Shankar. Baba also says: Whenever you explain [the picture], don't explain straightforward, establishment through Brahma, sustenance through Vishnu and destruction through Shankar. No. This is *wrong*. First is establishment through Brahma, then the destruction of the false Brahmins takes place through Shankar in the [family of] the true or false Brahmins that has been established. Even if they are slightly false [or] if they are slightly real and more false, still they will be destroyed; whether they belong to the *basic* [knowledge] or advance [knowledge], so many of them will not go to the new world. Should the *foundation* of the new world be of those who *pass* fully or should the foundation be of those who suffer punishments to some extent? (Student: Full pass.) They should *pass* fully. So, the population of the new world will be very little. So, it takes *time*. Then how much *time* is required for the second personality to be revealed? It definitely needs eight years. So, that second personality becomes a Brahmin from the year 69, [it becomes] a Brahmin from *Shudra* and it requires the *time* of 8-9 years for even that Brahmin to be revealed as a personality. So, the year 77 is the year of perfection. How many years passed? How many years passed between 69 and 77? (Student: 8 years.) 8-9 years passed.

ऐसे ही दूसरी मूर्ति का जो शूटिंग पीरियड है मनन-चिंतन-मंथन का काल है वो चारों युगों की शूटिंग का काल कब समाप्त होता है? अरे तीसरे नेत्र का जो मनन-चिंतन-मंथन का काम है वो कब पूरा होता है? चारों युगों की शूटिंग तो होती है ना। वो कब पूरी हुई? (जिज्ञासु - 2004) 2004 में रुंग वर्ष सहित। तो कौनसी मूर्ति आनी चाहिए फिर? तीसरी मूर्ति विष्णु की मूर्ति चाहिए जो प्रैक्टिकल में कार्य को संपन्न कर सके क्योंकि ब्रह्मा तो पतित ही है, दाढ़ी मूँछ वाला है, पूजा भी नहीं होती, मन्दिर भी नहीं बनते, मूर्तियाँ भी नहीं बनतीं। और शंकर को तो बहुरूपी दिखाया गया है। अमृत बांटता है, विष पीता है। तो शैव संप्रदाय वाले भी पवित्रता तो उतना ध्यान नहीं देते। भक्तिमार्ग में ब्रह्म समाजी भी हैं, शैव संप्रदाय भी हैं और वैष्णव संप्रदाय भी हैं। ज्यादा प्यूरिटी की भासना किसमें होती है? वैष्णव संप्रदाय वालों में। और प्युरिटी से ही प्रैक्टिकल होता है। तो उनका जो मुखिया है विष्णु देवता कहो, वैष्णो देवी कहो उसको भी प्रत्यक्ष होने में कुछ टाइम चाहिए या नहीं चाहिए? चाहिए। कितना टाइम चाहिए? ब्रह्मा पहली मूर्ति को प्रत्यक्ष होने में 16 साल, दूसरी मूर्ति शंकर को प्रत्यक्ष होने में 8 साल, तो तीसरी मूर्ति को कम से कम 4 साल तो चाहिए। तो कब पूरा होता है? (जिज्ञासु - 2008.) 2008 में। तीसरी मूर्ति प्रत्यक्ष होनी चाहिए।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Similarly, when is the *shooting period* of the second personality, the period of thinking and churning, the period of *shooting* of four ages completed? *Arey*, when is the task of thinking and churning of the third eye completed? The *shooting* of the four ages does take place, doesn't it? When was it completed? (Student: 2004.) [It was completed] in 2004, along with the *ruung* year (an extra year). So, which personality should come next? The third personality, the personality of Vishnu is required who could accomplish the task in practice because Brahma is certainly impure; he has a beard and a moustache; he is neither worshipped nor his temples are not constructed nor idols of him are built. And Shankar is shown to be multifaceted actor (*bahuruupi*). He distributes nectar and drinks poison. So, the members of the *Shaiv* community also do not pay much attention towards purity. In the path of *bhakti* there are *Brahm samaajis* (followers of Brahma), [those of] the *Shaiv* community as well as those of the *Vaishnav* community. Who are the ones with more vibrations of purity? Those from the *Vaishnav* community; and *practical* [work can be done] only through *purity*. So, is some *time* required for their chief - call him deity Vishnu [or] call her Vaishno Devi - to be revealed or not? It does need [some time]. How much *time* is required? It took 16 years for the first personality Brahma to be revealed; it took 8 years for the second personality Shankar to be revealed; so at least four years are required for the third personality to be revealed. So, when is it completed? (Student: 2008.) In 2008, the third personality should be revealed.

पहली मूर्ति ब्रह्म समाजियों के सामने प्रत्यक्ष हुई होगी पहले-पहले या रुद्रमाला के मणकों के बीच में प्रत्यक्ष हो गई होगी? या वैष्णव संप्रदाय वालों के बीच में प्रतयक्ष हो गई होगी? ब्रह्मा की मूर्ति ब्रह्मा के फालोअर्स में ही प्रत्यक्ष होगी। शंकर की मूर्ति। शिव-शंकर को मिला के एक कर दिया गया तो जरूर शैव संप्रदाय वाले जो रुद्र माला के मणके हैं उनके बीच में ही प्रत्यक्ष होगी। सन् 76 से भी प्रत्यक्षता हुई तो जिनके बीच प्रत्यक्षता हुई वो ब्रह्मा के फालोअर्स कहे जाएंगे या शंकर के फालोअर्स कहे जाएंगे? (किसी ने कुछ कहा।) ऐसे ही जो विष्णु की मूर्ति प्रत्यक्ष होगी वो रुद्रमाला के मणकों के बीच प्रत्यक्ष हो जावेगी, ब्रह्म समाजियों के बीच में प्रत्यक्ष हो जावेगी या उन विष्णु पंथियों का अपना कुल है? वैष्णव कुल कहा जाता है। विष्णु देवी कही जाती है। भारत माता शिव शक्ति अवतार अंत का यही नारा है। तो उनको भी 4 साल चाहिए और 4 साल पूरे होने के बाद वो अपने कुल में पहले प्रत्यक्ष होती है। वो राधा सो लक्ष्मी बनने वाली आत्मा है ना। तो राधा कौनसे कुल की होती है? जो चन्द्रवंशी घराना होगा ज्ञान चन्द्रमा ब्रह्मा को पक्का-पक्का फालो करने वाले होंगे, और कोई देहधारी को फालो करने वाले नहीं होंगे उनके बीच में ही प्रत्यक्ष होगी। ऐसे नहीं कि रुद्रमाला का मणका उनको पहले पहचान लेगा। उनके बीच में प्रत्यक्षता हो जावेगी। तो टाइम लग जाता है। रुद्र माला के मणके तो बाद में विजयमाला में पिरोये जाते हैं। तो संशय आने की कोई बात नहीं है कि 2008 पूरा होने जा रहा है। विष्णु जरूर चाहिए, तो हम अपनी विष्णु पार्टी बना लेते हैं। विष्णु तो पता नहीं कब प्रत्यक्ष होगा कि नहीं होगा? ढ़ेर सारी विष्णु पार्टी तैयार हो गई। विष्णु भगवान प्रत्यक्ष होने लगे। हाँ, जी।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Will the first personality have been revealed in front of the *Brahm samaajis* first of all or will it have revealed amidst the beads of *Rudramaalaa*[3]? Or will it have revealed amidst those belonging to the *Vaishnav* community? Brahma's personality will be revealed amidst the *followers* of Brahma only. As regards Shankar's personality… they combined Shiva and Shankar and made them one. So definitely, it will be revealed amidst those belonging to the *Shaiv* community, the beads of the *Rudramaalaa* themselves. Even when the revelation took place in the year 76, then the people among whom the revelation took place, will they be called the *followers* of Brahma or the *followers* of Shankar? (Student said something.) Similarly, when the personality of Vishnu is revealed, will it be revealed amidst the beads of the *Rudramaalaa*, amidst the *Brahm samaajis* or do those followers of Vishnu (*Vishnu panthi*) have a clan of their own? It is called *Vaishnav* clan. She is called Vishnu *devi*. Mother India, the incarnation of *Shivshakti* is the only slogan of the end. So, she too requires four years and after the completion of four years, she is revealed in her clan first. She is the soul who transforms into Lakshmi from Radha, isn't she? So, to which clan does Radha belong? She will be revealed only in the *Candravanshi*[4] family, the ones who firmly *follow* the Moon of knowledge, Brahma and not any other bodily being. It is not that the family of [the beads of] the *Rudramaalaa* will recognize her first, [or] that she will be revealed amongst them. So, it takes *time*. The beads of *Rudramaalaa* are threaded into the *Vijaymaalaa*[5] later on. So, there is no question of having a doubt: 2008 is about to be completed. Vishnu is definitely required so, we establish our Vishnu Party. Who knows when Vishnu will be revealed or whether he will be revealed or not? Numerous Vishnu parties became ready. [Many] Vishnu Gods have started to be revealed. Yes. … (to be continued)

Part-2

समयः 23.14-25.25

जिज्ञासुः आदि में स्वर्ग का मॉडल बना। (बाबाः हाँ, जी।) निमित्त बनी पाकिस्तान की धरणी।

बाबाः निमित्त बनी पाकिस्तान की धरणी। हाँ, जी।

जिज्ञासुः पाकिस्तान की धरणी कौन?

बाबाः पाकिस्तान की धरणी मुसलमानों की। मुसलमान ही निमित्त बने मुसलमानों की धरणी ही निमित्त बनी। तो जो फाउण्डेशन डालने वाली आत्माएं होंगी वो भी कौन थी? मुसलमान धरम में ही कनवर्ट होने वाली होंगी। इसलिए भक्तिमार्ग में उनकी यादगार बनाई गई है अजमेर में। अजमेर में स्वर्ग का मॉडल बनाया हुआ है। ब्रह्मा का मन्दिर भी बनाया हुआ है। वो भेड़-बकरियों का देश है। एक भेड़-बकरी जिस रास्ते में जाएगी, भले गड्ढे में ही जाए वो सारी उसी गड्ढे में कूद पड़ती हैं। वहाँ मेला लगता है। उस मेले में हिन्दू जाते हैं या मुसलमान जाते हैं या दोनों जाते हैं? मुसलमान ज्यादा जाते हैं। वहाँ मुसलमानों का मेला लगता है। नाम है उर्स। उसकी यादगार बनती है असली। वो मॉडल बनता है। सच्चा स्वर्ग स्थापन नहीं होता है क्योंकि मुसलमानों में या क्रिश्चियन्स में प्योरिटी नहीं होती है। उनके धर्म का फाउण्डेशन ही व्यभिचार है। वो स्वर्ग स्थापन नहीं कर सकते। इसके लिए सच्ची प्यूरिटी चाहिए। और वो भी प्रवृत्तिमार्ग की प्यूरिटी चाहिए। तो सच्चा फाउण्डेशन तो अब पड़ रहा है।

Time: 23.14-25.25

[3] The rosary of Rudra
[4] Those belonging to the Moon dynasty
[5] The rosary of victory

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Student: A model of heaven was created in the beginning [of the *yagya*]. (Baba: Yes.) The land of Pakistan became the instrument.
Baba: The land of Pakistan became the instrument. Yes.
Student: Who is the land of Pakistan?
Baba: The land of Pakistan is of the Muslims. It is the Muslims who became the instruments, the land of Muslims itself became the instrument. So, who were the souls that laid the *foundation*? They too will be the ones who convert to Muslim religion. This is why in the path of *bhakti*, its memorial has been made in Ajmer. A *model* of heaven has been built in Ajmer. Brahma's temple has also been built. That is the country of sheep and goats. On whichever way one sheep or goat goes… even if it goes into a pit, all of them jump into the same pit. A fair is organized there (in Ajmer). Do the Hindus go to that fair or do the Muslims go or do both of them go? Muslims go there in large number. A fair of Muslims is organized there; its name is '*Urs*'. Its true memorial is built. It becomes [just] a *model*. The true heaven is not established because the Muslims or Christians don't have *purity*. The very *foundation* of their religion is adultery. They cannot establish heaven. True *purity* is required for this (to establish heaven). And that too, the *purity* of the household path is required. So, the true *foundation* is being laid **now**.

समयः 25.26-33.14

जिज्ञासु ने कुछ कहा।

बाबाः जोर से बोलो। (जिज्ञासुः गीता पाठशाला वालों को...पड़ेगा। और मधुबन वालों को मधुबन छोड़ना पड़ेगा। ज्ञान सरोवर वालों को ज्ञाना सरोवर छोड़ना पड़ेगा।) हाँ, जी। (जिज्ञासुः ज्ञाना किसलिए छोड़ना पड़ेगा?) ज्ञान से? (दूसरा जिज्ञासुः बाबा, गीता पाठशाला वालों को गीता पाठशाला छोड़नी पड़ेगी।) हाँ, जी। हाँ, जी। मधुबनवालों को मधुबन छोड़ना पड़ेगा, ज्ञान सरोवर वालों को ज्ञान सरोवर छोड़ना पड़ेगा। (दूसरा जिज्ञासु - क्यों छोड़ना पड़ेगा, ऐसे पूछ रहे है।) और वही राजा बनकरके बैठे रहेंगे क्या? इस दुनिया से नष्टोमोहा बनाना है बाप को या नहीं बनाना है? कि इस दुनियादारी को पकड़ के बैठ जाएंगे? मान-मर्तबे की दुनिया को कोई पकड़ के बैठ पाएगा अंत तक? अरे, अपने आप नहीं छोड़ेंगे कोई तो तौर-तरीका बनेगा जो छोड़ना पड़े। अब वो चाहे माउंट आबू का मधुबन हो, चाहे मिनीमधुबन हों, चाहे वो स्थूल ज्ञान सरोवर हों ईंटों वाला माउंट आबू का और चाहे रुद्रमाला का सूक्ष्म ज्ञान सरोवर हो, चाहे वो बेसिक की गीतापाठशालाएं हों और चाहे वो एडवांस की गीतापाठशालाएं हों। कहीं स्वर्ग का फाउण्डेशन लग गया है क्या? कोई गीतापाठशाला में, कोई मधुबन में, कोई भी ज्ञान सरोवर में स्वर्ग का फाउण्डेशन लग गया क्या? नहीं लग गया। तो विनाश होगा या नहीं होगा? विनाश तो जरूर होगा। और विनाश होगा तो तो दरबदर होना पड़ेगा या नहीं होना पड़ेगा?

Time: 25.26-33.14
Student said something.
Baba: Speak loudly. (Student: Those living in the Gita *pathshaalaa* will have to… and those living in the Madhuban will have to leave the Madhuban. Those living in the *Gyaan sarovar* (lake of knowledge) will have to leave the *Gyaan sarovar*.) Yes. (Student: Why will they have to leave the knowledge?) From knowledge? (Another student: Baba, those living in the Gita *pathshaalaa* will have to leave the Gita *pathshaalaa*. .) Yes, yes. The residents of Madhuban will have to leave the Madhuban. The residents of *Gyaan sarovar* will have to leave *Gyaan sarovar*. (Another student: She is asking, why they will have to leave it.) So will you continue to sit there

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

as kings? Does the Father have to make us *nashtomohaa*[6] from this world or not? Or will you cling to the worldly affairs? Will anyone be able to cling to the world of respect and position till the end? *Arey,* if they do not leave voluntarily, then some methodology will certainly be created so that they have to leave. Well, whether it is the Madhuban at Mount Abu, or it is the *mini madhuban,* whether it is the physical *Gyaan sarovar* made of bricks at Mount Abu or the subtle *Gyaan sarovar* of the *Rudramaalaa*; whether they are the *Gita pathshaalaas* of the *basic* [knowledge] or they are the *Gita pathshaalaas* of the advance [knowledge]. Has the *foundation* of heaven been laid anywhere? Has the *foundation* of heaven been laid in any *Gita pathshaalaa*, any Madhuban, any *Gyaan sarovar*? It hasn't been laid. So, will the destruction take place or not? Destruction will definitely take place. And when destruction takes place, will they have to become homeless or not?

सैम्पल छोटा सा दिखा दिया कलकत्ते में। ईस्टर्न ज़ोन है ना। रवीन्द्र भाई को जब जेल हो गई थी, टीवी पे घमासान निकला, रेडियो में निकला, अखबारों में निकला, तो कलकत्ता मिनीमधुबन मे आने वालों ने सब ने आना बन्द कर दिया। दो महीने तक क्लास बन्द रहा। कोई बाहर से नहीं आता था। क्या हालत हो गई थी? इतनी ग्लानि को वहाँ के जिज्ञासुओं ने सहन किया क्या? तो ऐसी हालत चारों ओर नहीं हो सकती क्या? लूपहोल तो सबमें भरी हुई है। पक्का ब्राह्मण तो कोई नहीं बना है। और पक्का ब्राह्मण बनेंगे ही नहीं तो पक्के देवताओं का संगठन प्रत्यक्ष हो जावेगा? नहीं हो सकता।

A small *sample* was shown [by the incident] in Calcutta. It is the *Eastern Zone*, isn't it? When Ravindra *bhai* (a PBK brother) was jailed, there was uproar on the TV, *radio* and the newspapers; so all those who used to come to the Calcutta *mini madhuban* stopped going [there]. They stopped [going for] classes for two months. Nobody from outside went there. What was the situation? Did the students of that place tolerate such defamation? So, can't such a situation arise everywhere? There are loopholes (weaknesses) in everyone. Nobody has become a real Brahmin [yet]. And when you don't become real Brahmins at all, will the gathering of the real deities be revealed? It cannot.

और फिर मालाओं के मणके भी नंबरवार प्रत्यक्ष होने हैं। पहला नम्बर, दूसरा नंबर। कोई तो तरीका होगा जो नंबर प्रत्यक्ष होंगे। अभी तो कोई भी अपने को नीचा मानने के लिए तैयार नहीं है। और माला में तो ऊपर नीचे मणके होते ही हैं। जैसे मिलिटरी में ऊपर का अधिकारी और नीचे का अधिकारी। नीचे का अधिकारी ऊपर के अधिकारी को आँख उठाके नहीं देख सकता, उंगली नहीं उठा सकता। ऐसे माला पूरी अनुशासन में होगी। अभी तो न रुद्र माला में कोई अनुशासन देखने में आता है, कोई एक कंट्रोलर की चलती है और न बेसिकवालों में कोई संगठन देखने में आता है जो एक के कंट्रोल में हो। सबका अपना-अपना डफली अपना-अपना राग। जैसे दुनियावालों की अपनी-अपनी कमेटियाँ बनती रहती हैं, वेसे यहाँ भी अलग-अलग कमेटियाँ बनाय लेते हैं, जहाँ चाहे वहाँ भगद्दड मचा दी।

[6] The one who has conquered all kinds of attachment

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

And the beads of the rosaries are also to be revealed number wise[7]. The first *number*, [then] the second *number* [will be revealed]. There must be some method through which the numbers will be revealed. Now nobody is ready to accept himself to be inferior but in a rosary, the beads are definitely up and down. For example, [there is] a senior officer and a junior officer in the *military*. A junior officer cannot look straight into the eyes of the senior officer. He cannot raise finger at him. Similarly, the rosary will be in complete control. Now, neither any kind of discipline can be observed in [anyone from among] the *Rudramaalaa*, [there isn't] the rule of any one *controller* nor can any gathering be seen among those who follow the *basic knowledge*, [the gathering] that is under the *control* of one [soul]. Everyone sings his own song (*apni apni dafli, apnaa apnaa raag*). Just as the people of the world keep forming their own committees, similarly, people set up their separate committees here too and create a commotion wherever they wish.

तो बाबा ने जो कुछ बोला हुआ है, चाहे शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा के मुख से बोला हो और चाहे ब्रह्मा बाबा ने गुल्ज़ार दादी के मुख से बोला हो, जो कुछ भी बोला पत्थर की लकीर है। उसको कोई काट नहीं सकता। ब्रह्मा के वाक्य भी ब्रह्मा के वाक्य हैं। भक्तिमार्ग में उनको कहा जाता है - ब्रह्मम् वाक्यम् जनार्दनम्। ब्रह्मा के वाक्य अटल हैं। उसमें संशय लाने की बात नहीं है। ऐसे ही सहज-सहज सब नहीं चलता रहेगा। विनाश होगा और विनाश कल्याणकारी है या अकल्याणकारी? (जिज्ञासु - कल्याणकारी।) तो कल्याण की शुरुआत तो पहले अन्दर से होनी चाहिए या बाहर से होनी चाहिए? (किसी ने कहा: अंदर से।) अन्दर माना क्या? पहले ब्राह्मण परिवार से शुरुआत होनी चाहिए। सन् 76 में विनाश की घोषणा की। तो क्या झूठी घोषणा कर दी थी? अब समझने वालों ने ये समझ लिया कि बाहर की दुनिया का विनाश हो जावेगा। तो समझने वालों की गल्ती है या जिसने सुनाया उसकी गल्ती है? सन् 76 में ब्राह्मणों की दुनिया में विघटन शुरु हो गया। दो अलग-अलग संगठन हो गए। एक की बात न मिले दूसरे से। हाँ।

So, whatever Baba has said… whether Shivbaba has narrated through the mouth of Brahma Baba or Brahma Baba has narrated through the mouth of Dadi Gulzar, whatever has been spoken is like a line drawn on a stone. Nobody can cut it. Brahma's words are certainly the words of Brahma. In the path of *bhakti* they are called: *Brahmam vaakyam Janaardanam* (the words of Brahma are the words of God). Brahma's words are unchangeable. There is no question of having doubts about them. Everything will not continue to take place easily like this. When the destruction takes place… and is destruction beneficial or harmful? (Student: Beneficial.) So, should the benefit begin from inside at first or from outside? (Someone said: From inside.) What is meant by inside? It should begin from the Brahmin family at first. The declaration of destruction [to take place] was made for the year 76 so, was a false declaration made? Now, people thought that the outside world will be destroyed. So, is it the mistake of the people or is it the mistake of the narrator? The disintegration of the world of Brahmins started in the year 76. Two separate gatherings were formed. The concept of one [gathering] does not match with [that of] the other. Yes.

समयः 33.15-34.35
जिज्ञासु ने कुछ पूछा।
बाबाः क्या बोला?

[7] Sooner or later according to their spiritual effort

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासुः क्या हम बच्चे जीवन मुक्ति को प्राप्त कर सकते हैं?

बाबाः बिल्कुल। बच्चे जीवनमुक्ति को प्राप्त कर सकते हैं। जीवन में रहते मुक्ति नहीं प्राप्त कर सकते? सब शरीर छोड़ जावेंगे तो नई दुनिया कहाँ से आ जावेगी? हँ? जीवन रहेगा कुछ लोगों का तब तो नई दुनिया बनेगी। सारे ही शरीर छोड़ देवें फिर क्या ऊपर से टपकेंगे? (दूसरा जिज्ञासु - उसके कहने का भाव ये है बाबा कि हम छोटे बच्चे है।) छोटे बच्चों के लिए ही बताया, छोटे बच्चे तो और सतोप्रधान होते हैं। छोटे बच्चों की बुद्धि में याद जास्ती छपती है या बड़े बच्चों, जो बड़े बच्चे हैं बाबा के उनकी बुद्धि में याद अच्छी छपती है? बड़े तो व्यभिचारी हो रहे हैं, विकारी हो रहे हैं। और बच्चे तो? महात्मा होते हैं, निर्विकारी होते हैं। उनकी बुद्धि शुद्ध होती है। उनकी बुद्धि में बाबा की याद छप जाती है। और?

Time: 33.15-34.35
Student asked something.
Baba: What did you say?
Student: Can we children achieve *jiivanmukti* (true liberation)?
Baba: Definitely, you can achieve *jiivanmukti.* Can't you achieve *mukti* (liberation) while being alive? If everyone leaves his body then how will the new world be formed? The new world will be formed only when some people remain alive. If everyone leaves his body then, will people drop from above? (Another student: Baba, what he means to say is that they are small children…) It was said for the small children themselves; small children are much more *satopradhaan*[8]. Is remembrance imprinted more on the intellect of the small children or is it imprinted more on the intellect of the elder children of Baba? The elder ones are becoming adulterous, vicious; and what about the children? They are *mahaatmaas* (great souls), vice less. Their intellect is pure. Baba's remembrance is imprinted in their intellect.

समयः 34.40-35.18

जिज्ञासुः बाबा, जब आदि में ब्रह्मा बाबा मिलते थे, बच्चे लाल मिर्ची खाओगे, जितना पानी पियोगे और डरायेंगे तो नहीं डरोगे। इसका अर्थ क्या होगा?

बाबाः लाल मिर्ची खाओगे?

जिज्ञासुः जितना पानी पियोगे (बाबाः हाँ।) डराने से नहीं डरोगे। (बाबाः हाँ।) इसका अर्थ क्या हुआ?

बाबाः इसका अर्थ ये हुआ कैसी भी परिस्थिति आए हम हिलने वाले नहीं हैं।

Time: 34.40-35.18
Student: Baba, when Brahma Baba used to meet [the children] in the beginning [the *yagya*], [he used to say:] children if you eat red chilies, if you drink more water and if you do not fear on being frightened. What does it mean?
Baba: If you eat red chilies?
Student: The more water you drink. (Baba: Yes.) If you do not feel afraid even if someone scare you. (Baba: Yes.) What does it mean?
Baba: It means that whatever kind of circumstance we have to face, we are not going to shake.

समयः 35.22-36.32

[8] Consisting in the quality of goodness and purtiy

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासुः बाबा, बाबा बोलते हैं कि अनपढ़ माताएं अच्छी हैं। तो अनपढ़ माताएं बाबा से बात ही नहीं कर सकेंगी तो कैसे अच्छी हैं?

बाबाः अनपढ़ माताएं इसलिए अच्छी हैं कि बाहर की दुनिया की पढ़ाई डागली पढ़ाई है। डागली पढ़ाई का मतलब कुत्ता कुतिया बनाने वाली पढ़ाई। नहीं पढ़े हैं तो अच्छा हुआ ना। अर्जुन को भी भगवान ने कहा गीता में - अर्जुन तू पढ़ा हुआ सब कुछ भूल जा। तो पढ़े हुए को भूलने में टाइम लगेगा कि नहीं लगेगा? अगर न पढ़ा हुआ होता तो टाइम नहीं लगता। तो माताएं अगर नहीं पढ़ी लिखी हैं, कोरा कागज़ हैं तो आर अच्छी बात है। इसलिए इस ईश्वरीय ज्ञान में ज्यादा माताएं निकल रही हैं या पिताएं निकल रहे हैं? (जिज्ञासु - माताएं निकल रही हैं।) क्यों निकल रही हैं? (जिज्ञासु - माताओं में श्रद्धा-विश्वास, भावना होती है।) हाँ, जी।

Time: 35.22-36.32
Student: Baba, Baba says that illiterate mothers are better. So, how are the illiterate mothers better if they cannot even speak to Baba?
Baba: Illiterate mothers are better because the studies of the outside world are *dogly* studies. *Dogly* study means the study that makes you dogs and bitches. It is better if you have not studied, isn't it? God told Arjun too in the Gita: Arjun, forget everything that you have studied. So, will it take *time* to forget whatever you have studied or not? It would not have taken *time* if he had not studied. So, if the mothers are not literate, if they are [like] blank papers then it is better. This is why, are the mothers coming in greater number in this Divine knowledge (of God) or are fathers coming [in greater number]? (Student: Mothers are coming.) Why? (Student: There is faith and devotion in the mothers.) Yes.

समयः 36.35-40.42

जिज्ञासुः बाबा, बी.के. वाला भाई है। त्रिमूर्ति वाला चित्र उसको समझाए हैं तो कहते हैं अपना-अपना तरीका होता है समझाने का। (बाबाः हाँ, जी। हाँ।) अपना-अपना तरीका होता है।

बाबाः ठीक है, तरीका अपना-अपना है। लेकिन बात तो सच्ची बात तो एक ही होती है। तरीका अपना-अपना अलग-अलग हो। लेकिन सच्चाई एक होती है या अलग-अलग होती है? सच्चाई तो एक ही होगी। तो जिस तरीके से भी समझाओ। लेकिन सच्चाई की बात समझाओ।

जिज्ञासुः त्रिमूर्ति का क्लीयर करके समझाया कि अपना-अपना तरीका होता है।

बाबाः हाँ, लेकिन सच्चा ही तो समझाना है ना। तो सच्चा कौन है?

जिज्ञासुः सच्चा तो एडवांस वाला है।

बाबाः ना। सच्चा एक है। और सच्चा है शिव। लेकिन वो सच्चा शिव कैसे पता चले? बिन्दु-बिन्दु आत्माएं तो सब हैं। कौनसी बिन्दु सच्ची है? कैसे पता चले? (जिज्ञासु - ज्ञान सुनाने पर।) हाँ। क्या ज्ञान सुनाएं? (जिज्ञासु - सच्चा-सच्चा।) हाँ, क्या सच्चा-सच्चा सुनाएं जो एक बिन्दी प्रत्यक्ष हो जाए? वो एक-एक सच्ची बिन्दी आत्मा जो सारी दुनिया में झूठ को खत्म करने वाली है और सचखण्ड की स्थापना करने वाली है सच्चाई से, सच ज्ञान सुनाकर।

Time: 36.35-40.42
Student: Baba, there is a BK brother. When I explained the *Trimurty* picture to him, he says each one has his own way of explaining. (Baba: Yes. Yes.) Each one has his own way.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Baba: It is correct. Each one has his own way. But the truth is only one. The method of each one may be different but is the truth one or different? Truth will indeed be only one. So, you may explain in any method but you should explain the truth.
Student: I explained the *Trimurty* clearly [to him, he said] that each one has his own way.
Baba: Yes, but you have to explain only the truth, haven't you? Who is true?
Student: The advance [knowledge] is true.
Baba: No. The One is true and Shiva is true. But how can we recognize that true Shiva? All the souls are points. Which point is true? How can we know this? (Student: When the knowledge is narrated.) Yes. Which knowledge should be narrated? (Student: True [knowledge].) Yes, which true knowledge should we narrate so that the one Point is revealed? That one true point soul is going to end the falsehood in the entire world and is going to establish the land of truth through truth, by narrating the true knowledge.

वो प्रत्यक्ष कैसे होगी? बिन्दी फुदकती फिरेगी क्या? बिन्दी आकरके फुदकती रहे तो प्रत्यक्ष हो जाएगी? सर्वव्यापी हो जाए तो प्रत्यक्ष हो जावेगी? कब प्रत्यक्ष होगी? (किसी ने कुछ कहा) जब एक में प्रत्यक्ष हो? तो एक को इंडिकेट करना पड़े। समझाना पड़े। दूसरे पूछें ये एक ही कैसे है तो हमें प्रूफ देना पड़े। (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) ये एक ही है जिसके द्वारा परमपिता परमात्मा अपना कार्य करते हैं, जो कार्य दुनिया में और कोई धरमपिताएं, महात्माएं, गुरु, विद्वान, आचार्य नहीं कर सके। सबने दुनिया को नरक बनाया है। एक बाप ही आकरके स्वर्ग बनाते हैं। और स्वस्थिति से स्वर्ग बनाते हैं। ये स्वस्थिति सौ परसेन्ट धारण करने वाला पुरुषार्थ से दुनिया की एक ही आत्मा निकलती है। जिसका नाम शिव के साथ जोड़ा जाता है। देवताएं तो 33 करोड़ भी हैं। देवताओं की तीन मूर्तियाँ भी हैं परन्तु एक ही मूर्ति ऐसी है जो स्वस्थिति में शिव के समान बन जाती है। बाप समान स्टेज को प्राप्त कर लेती है। इसलिए जो एक मूर्ति, मूर्ति माना मूर्त रूप, साकार रूप। वो एक ही साकार रूप संसार में प्रत्यक्ष होता है। ज्ञान की टांय-टांय से प्रत्यक्ष नहीं होता है। प्रैक्टिकल निराकारी स्टेज देखने में आती है सारी दुनिया को। जो निराकारी स्टेज न इब्राहिम की बनी न बुद्ध की बनी, न क्राइस्ट की, न गुरु नानक की। ऐसी निराकारी स्टेज जब होती है तब बाप प्रत्यक्ष होता है।

How will it be revealed? Will the point keep jumping? Will the point be revealed if it keeps jumping? Will it be revealed if it becomes omnipresent? When will it be revealed? (Someone said something.) Is it when it is revealed in one [being]? So, you will have to *indicate* the one [being], you will have to explain [about him]. If others ask: how this one alone [is God], then we will have to give the *proof*. (Student said something.) This is the only one through whom the Supreme Father Supreme Soul performs His task, which no other religious father, great souls, guru, scholars and teachers could perform. Everyone has made the world into a hell. Only the one Father comes and makes it into heaven. And He makes it into heaven through the stage of the self (*swasthiti*). Only one soul emerges in the world to assimilate hundred *percent swasthiti* through *purushaarth*. His name is combined with [the name of] Shiva. There are 33 crore deities (330 million) as well. There are three personalities of deities as well, but there is only one personality who becomes equal to Shiva in [attaining] *swasthiti* and achieves a *stage* equal to the Father. This is why, one personality (*muurti*); *muurti* means an incarnate, the corporeal form. Only one corporeal form is revealed in the world. He is not revealed in the world through blabbering knowledge. The *practical* incorporeal *stage* can be seen by the entire world. It is the incorporeal

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

stage which neither Abraham, nor Buddha, neither Christ nor Guru Nanak could achieve. When such an incorporeal *stage* is achieved, the Father is revealed. …(to be continued)

Part-3

समयः 40.47-43.32

जिज्ञासुः बाबा, नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा किसे कहेंगे?

बाबाः न अपने तन से मोह हो, तन से कोई लगाव नहीं। इन्द्रियों और इन्द्रियों के भोगों से कोई लगाव नहीं। देह के पदार्थों से कोई लगाव नहीं। देह के संबंधियों से कोई लगाव नहीं। देह के संसर्ग-संपर्क में जो भी आने वाले हैं, कितने भी मीठे, कितने भी प्यारे क्यों न हों, उनसे कोई लगाव न रहे। उसको कहते हैं नष्टोमोहा। फिर है स्मृतिलब्धा। किसी स्मृति? अनेकों की स्मृति नहीं। एक की स्मृति। स्मृति माने याद। और याद भी किसकी आती है? जिसको आँखों से देखा जाता है, बुद्धि से समझा जाता है। उसी की याद आती है। कोई चीज़ आँखों से देख लो, याद आएगी कि नहीं? और आँखों से देखने के साथ बुद्धि से समझ भी लिया कि यही हमारे लिए सबसे जास्ती कल्याणकारी है दुनिया में। तो जो भी आत्माएँ हैं दुनिया में, सभी आत्माएं, चाहे कितने भी बड़े ते बड़े देवताएं क्यों न हों, एक को छोड़करके सब स्वार्थी पार्ट बजाते हैं। जिनको-जिनको रथ का परसेन्टेज में भी मोह रह जाता है, लगाव रह जाता है तो स्वार्थ जरूर रहता है और जब स्वार्थ रहता है तो 100 परसेन्ट परमार्थी नहीं हो सकता। पहले स्वार्थ का काम करेगा, स्वार्थ पूरा करेगा, फिर बाद में दूसरी बात। और शिव आकरक कौनसा पार्ट बजाता है? सौ परसेन्ट परमार्थी। उसको अपने लिए **कुछ** भी नहीं चाहिए। कोई मान-मर्तबा नहीं चाहिए।

Time: 40.47-43.32
Student: Baba, who will be called *nashtomohaa smritilabdhaa*?
Baba: Neither should there be attachment for our body; there should be no attachment for the body. There should be no attachment for the *indriyaan*[9] and the pleasures of the *indriyaan*. There should be no attachment for the materials related to the body. There should be no attachment for the relatives of the body. There should be no attachment for all those who come in contact and connection with the body, no matter how sweet, lovely they are. That is called [to be] *nashtomohaa.* Then [it is said] *smritilabdha*. Whose *smriti* (remembrance)? Not the remembrance of many. The remembrance of the One. *Smriti* means remembrance; and who comes to our mind? Only the one who is seen through the eyes, the one who is understood through the intellect comes to our mind. If you see anything through the eyes, will it come to the mind or not? And along with seeing through the eyes, if you also understood it through the intellect: 'this one alone is the most beneficial for us in the world'; so all the souls in the world… even if they are the biggest deities in the world, except the One all the others play a selfish *part* (role). All those who have the attachment for the chariot in any *percentage*, then they definitely have selfishness [in them]; and when there is selfishness, he cannot be 100 percent *parmaarthi* (altruistic). He will first perform the task of selfishness (*swaarth*); first he will fulfill his self-interest and then he will take up other topics. And what *part* does Shiva play when He comes? [He is] hundred *percent parmaarthi.* He does not require **anything** for himself. He does not require any respect or position.

[9] Parts of the body used to perform actions and the sense organs

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

समयः 43.37-45.33

जिज्ञासुः बाबा, कोई नवजात शिशु जो पैदा होता है उसका दसवाँ...जो यहाँ बताया जाता है सिर के उपर...

बाबाः दसवाँ? (जिज्ञासु: यहाँ ।) हाँ, क्या बताया जाता है?

जिज्ञासुः बहुत कमजोर होता है।

बाबाः तालु कमजोर होता है। (जिज्ञासु - क्यों?) बुद्धि कमजोर होती है। बड़ा होगा तभी तो बुद्धि मजबूत होगी। अरे बुद्धि, जब बड़ा हो जाएगा तभी तो सालिम बुद्धि बनेगा। तब तक तो बच्चा बुद्धि रहेगा ना। अरे? भरपाई हो जाएगा या खाली रहेगा? बुद्धि भरपाई हो जाएगी या खाली रहेगी? अरे? (जिज्ञासु - भरपाई हो जाएगी।) हाँ, जब बड़ा हो जाएगा तो बुद्धि भरपाई हो जाएगी तो तालु भी भर जाता है।

Time: 43.37-45.33
Student: Baba, why is the tenth…of a new born baby, which is said to be here on the head…
Baba: Tenth? (Student: Here.) Yes, what is said [about it]?
Student: It is very weak.
Baba: The *taalu* (the fontanelle) is weak. (Student: Why?) The intellect is weak. The intellect will become strong only when he grows up. *Arey*, his intellect will become mature only when he grows up. Till then he will have a child like intellect, won't he? *Arey*! Will it be filled up or will it remain empty? Will the intellect be filled up or will it remain empty? *Arey*! (Student: It will be filled up.) Yes, when he grows up, the intellect will be filled up (become mature), so, the *taalu* also is filled.

जिज्ञासुः शास्त्रों में ऐसा लिखा गया है कि आत्मा यहाँ प्रवेश करती है।

बाबाः शास्त्रों में ऐसा लिखा गया है, वैज्ञानिकों ने वैसा कहा है, भूत-प्रेतों ने ऐसा उनको बताया है, देवी-देवताएं प्रवेश करते हैं वो वैसा बताते हैं। अरे दुनिया जाने क्या-क्या बोलती है। वो क्यों सुनते हो? तुम्हें विश्वास नहीं है बाबा की नॉलेज पर, तभी तो उन बातों पे ध्यान देते हो। उन बातों में ध्यान क्यों जाता है जो सारी संगठन के बीच में कहने की दरकार पड़ गई? वेरिफाय करने के लिए कि ये बात सच्ची है या झूठी है? इसका मतलब बाबा की बात झूठी है। तब हम दूसरी बात पर विश्वास, विचार करें।

Student: It has been written in the scriptures that the soul enters here (through the fontanelle).
Baba: It has been written like this in the scriptures, the scientists have said that, the ghosts and spirits have said this, the deities who enter [the body of someone] say like that. *Arey*, the world keeps saying so many things. Why do you listen to it? You do not have faith on Baba's *knowledge*; that is why you pay attention to those topics. Why do you pay attention to the topics that caused a necessity to be said in the midst of the entire gathering, to *verify* it, whether it is true or false? It means that Baba's words are false; it is then that you believe or think over the other topics.

समयः 45.37-48.22

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासुः बाबा, लाईट-माईट हाउस जो मुरली में दिया हुआ है, तो अभी तो हमको दिखाई नहीं पड़ रहा है।

बाबाः क्या नहीं दिखाई पड़ रहा है?

जिज्ञासुः लाईट-माईट हाउस।

बाबाः लाईट माने क्या? (जिज्ञासुः दृष्टि।) लाईट माने दृष्टि? लाईट माने रोशनी। (जिज्ञासु - हाँ।) रोशनी माने ज्ञान की रोशनी या ये स्थूल रोशनी? (जिज्ञासु - ज्ञान की रोशनी।) ज्ञान की रोशनी तुम्हें अभी तक दिखाई नहीं पड़ी? (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) माने तुम्हें ज्ञान की रोशनी अभी तक नहीं दिखाई पड़ी? पहले ज्ञान दाता आता है कि पहले ज्ञान आता है? (जिज्ञासु - ज्ञानदाता।) हँ? (जिज्ञासु - ज्ञानदाता।) अरे? किसी के पास पहले ज्ञान आएगा तब ज्ञान दाता के पास पहुँचेगा या पहले ही ज्ञानदाता मिल जाएगा? पहले क्या आता है? पहले ज्ञान आता है। इसका मतलब तुम्हारे पास अभी तक ज्ञान की रोशनी ही नहीं आई। (जिज्ञासु - आई बाबा।) आई तो फिर क्यों कहते हो कि लाईट हाउस हमें मालूम नहीं कहाँ है? (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) जो बच्चे ईर्ष्या करते हैं? (जिज्ञासु: माना किसी बच्चे पर लाईट-माईट देते है, रोशनी देते है तो वो बच्चे निकल नहीं रहे है ।) आपको लाईट हाउस की लाईट ज्ञान की आई या नहीं आई? (जिज्ञासु - आई।) तो क्यों कहती हो लाईट हाउस का हमें अनुभव नहीं हुआ?

Time: 45.37-48.22
Student: Baba, at present, we are unable to see the light-might house that has been mentioned in the murlis.
Baba: What are you unable to see?
Student: Light-might house.
Baba: What is meant by *light*? (Student: *Drishti*.) Does *light* mean *drishti* (vision)? *Light* means brightness (*roshni*). (Student: Yes.) Does brightness mean the brightness of knowledge or this physical brightness? (Student: The brightness of knowledge.) Weren't you able to see the brightness of knowledge till now? (Student said something.) Does it mean that you have not been able to see the brightness of knowledge till now? Does the Giver of knowledge come first or does the knowledge come first? (Student: The Giver of knowledge.) Hum? (Student: The Giver of knowledge.) *Arey*! Will someone reach the Giver of knowledge when he receives the knowledge first or will he find the Giver of knowledge well before? What comes first? The knowledge comes first. Does it mean that the light of knowledge hasn't reached you so far? (Student: Baba, it has reached.) If it has reached you, why do you say that you don't know where the *light house* is? (Student said something.) The children who feel jealous? (Student: I mean that when we use light-might, when we throw light to some children, they are not coming [in knowledge].) Did you receive the *light* of knowledge from the *light house* or not? (Student: We received it.) Then, why do you say that you did not feel [the light of] the *light house*?

दूसरा जिज्ञासुः इनका कहना है बाबा कि हम किसी को ज्ञान समझाते हैं तो उसका प्रभाव नहीं होता है।

बाबाः प्रभाव नहीं पड़ता है ये हमारी कमजोरी है या उसकी कमजोरी है? (सभी ने कहा: हमारी।) जो पारसनाथ बन जावेगा तो पारसनाथ के जो भी संसर्ग-संपर्क में आवेगा वो पारस से संग के रंग में आकरके बदलेगा या नहीं बदलेगा? (किसी ने कहा: बदलेगा।) तो गल्ती किसकी हुई?

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

हमारी गल्ती है। हमारे में इतनी प्यूरिटी की पावर नहीं है, इतनी ज्ञान की पावर नहीं है, इतने याद की पावर नहीं है जो शिवबाबा हमारे अन्दर प्रवेश करके उसको दृष्टि देकरके ज्ञान देकरके कन्विन्स कर दे। बाबा तो कहते हैं मैं बच्चों में प्रवेश करता हूँ। कोई समझने वाला तीखा होता है। उसको नहीं समझा पाता है तो मैं उसमें प्रवेश कर जाता हूँ। बोला कि नहीं बोला? (जिज्ञासु - बोला।) तो अगर शिवबाबा को हम समझाने के लिए अपने पास आकर्षित नहीं कर सकते तो याद की हमारी कमी है। तो समझने वाले की क्या कमी है? कोई नहीं समझता है लाईट हाउस का अनुभव नहीं करता है तो जरूर हम लाईट हाउस नहीं बनें हैं।

Another student: Baba, what she means to say is that when we give knowledge to someone, it does not have an effect [on them].

Baba: If it does not have an effect, then is it our weakness or his weakness? (Students: It is our [weakness].) If someone becomes Parasnath, then will anyone who comes in connection and contact with Parasnath be changed by the colour of company of *paras*[10] or not? (Someone said: He will change.) So, whose mistake is it? It is our mistake. We don't have the power of *purity*, the *power* of knowledge, the *power* of remembrance to the extent that Shivbaba enters us, gives him *drishti* and convinces him (the student). Baba does say: I enter the children. If a student is clever, if he (the one who explains) is unable to explain to him, I enter him (the one who explains). Has it been said so or not? (Student: It has been said.) So, if we cannot attract Shivbaba towards us in order to explain [the knowledge] to someone, then it is our shortcoming of remembrance. Then, how is it a weakness of the student? If someone does not understand, if someone does not experience the *light house*, then definitely we haven't become a *light house*.

समयः 48.25-50.04

जिज्ञासु ने कुछ पूछा।

बाबाः मानसरोवर? मानसरोवर उसे कहेंगे जिसका दुनिया में ससे जास्ती मान-मर्तबा हो। और मान-मर्तबा दुनिया में उसी का सबसे जास्ती होता है जो बहुत ऊँची स्टेज वाला हो। इसलिए मानसरोवर पहाड़ों पर दिखाते हैं। जैसे शंकरजी के लिए कहते हैं - कहाँ रहते हैं? पहाड़ों पर। कैलाश पर्वत पर। तो कैलाश पर्वत पर वास्तव में रहते हैं या ऊँची स्टेज में रहते हैं? ऊँची स्टेज में रहते हैं। ऐसे ही वो शुद्ध ज्ञान जल धारण करने वाला जो मानसरोवर है चैतन्य में कोई ऊँची स्टेज वाला है जिसके किनारे हंसों का निवास होता है। वो ज्ञान के मोती ही चुगते हैं हंस। कंकड़-पत्थर छोड़ते जाते हैं। इसने क्या कहा? उसने क्या कहा? वो ऐसा कहता है। वो वैसा कहता है। ये दुनिया जो कुछ कहती है वो कंकड़ मार रही है, हमारी बुद्धि को भ्रमित कर रही है या एक ठिकाने लगा रही है? भ्रमित कर रही है। एक की जिनको पहचान नहीं है, वो दुनियाभर की बातें सुनाते रहते हैं और सुनते भी वो लोग रहते हैं जिनको एक की पहचान नहीं है।

Time: 48.25-50.04

Student asked something.

Baba: *Mansarovar*? The one who is respected and honoured the most in the world will be called *Mansarovar*. And only the one who is in a very high *stage* is respected and honoured the most in the world. This is why [the lake] *Mansarovar* is shown on the mountains. For example, it is said for Shankarji; where does he live? On the mountains, on Mount Kailash. So, does he actually live

[10] A mythical stone believed to transform whatever it touches into gold.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

on Mount Kailash or in a high *stage*? He lives in a high *stage*. Simiarly, the living Mansarovar, who holds the pure water of knowledge, is the one with a high *stage* [and] the swans reside on the banks of it. They, the swans pick only the pearls of knowledge. They leave back the pebbles and stones. What did this one say? What did that one say? He says like this. That one says like this. Whatever this world says; is it throwing pebbles, is it misleading our intellect or is it taking it to one destination? It is misleading [our intellect]. Those who do not recognize the One keep narrating various topics related to the world and only those people who do not recognize the One keep listening [to those topics].

समयः 50.07-51.26

जिज्ञासु ने कुछ कहा।

बाबाः (दूसरे जिज्ञासु से) क्या बोला? तमको ज्यादा सुनाई पड़ता है। सुना। (जिज्ञासु से) नहीं आई यहाँ तक आवाज़।

दूसरा जिज्ञासुः कृष्ण का पांव टेढ़ा दिखाया गया बाबा और मुरली टेढ़ी दिखाई गई।

बाबाः हाँ, उनका तो सारा शरीर ही टेढ़ा-मेढ़ा दिखाया गया है। जैसे अष्टावक्र हो। क्या? अड़भंगा पार्ट है। अड़भंगा माने? देखने सुनने वालों को अकल काम नहीं करती है। ये कैसा पार्ट बजाय रहा है। सीधा-साधा हो तो सबकी समझ में आ जाए। इसलिए टेढ़े पांव दिखाते हैं। माने जो ज्ञान सुना रहा है वो ज्ञान बुद्धि रूपी पांव से सीधा-सीधा कोई को समझ में नहीं आ रहा है, जो सीधी बुद्धि वाले हैं उनकी समझ में सीधे-सीधे आ जाता है। जो टेढ़ी बुद्धि वाले हैं उनको वो पांव ही टेढ़े दिखाई पड़ते हैं।

Time: 50.07-51.26

Student said something.

Baba: (To another student:) What did she say? You can hear well. Tell [me]. (To the student:) The voice could not reach here.

Second student: Baba Krishna's legs are shown to be crossed and the murli (flute) [in his hands] is shown to be inclined.

Baba: Yes. His entire body has been shown to be twisted; he is *Ashtavakra*[11] in a way. What? It is an absurd (*arbhangaa*) *part*. What is meant by *arbhangaa*? The intellect of the observers and listeners does not work. [They think:] What kind of a *part* is he playing? If it is simple then everyone can understand. This is why the legs are shown to be crossed. It means that the knowledge that he narrates is not understood by anyone straightaway through his leg like intellect. Those who have a simple intellect understand it in a simple manner. To those with a cunning intellect, those very legs appear to be crossed.

समयः 51.29-53.12

जिज्ञासुः बाबा, अभी आप ही ने कहा कि माताएं पढ़ी नहीं है तो अच्छा है। माताएं तो स्वर्ग का गेट खुलवाती है। और फिर जहर की पुड़िया माता कैसे है?

बाबाः वो दुनिया वालों ने कहा या बाबा ने कहा? वो दुनियावालों की बातें पकड़ने की आदत पड़ गई है। अरे दुनियावालों ने ज़हर की पुड़िया माता को बताया या बाबा ने बताया? (जिज्ञासु: सी.डी. में सुना था ।) सीडी में बाबा ने बताया? कि माताएं ज़हर की पुड़िया हैं। काहे के लिए दोष

[11] Mythological name of a person born seriously crippled (as the result of a curse)

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

लगाती? 63 जनम तो बाबा के ऊपर दोष लगाते ही रहे अब इस जनम में क्यों दोष लगा रही हो? बाबा ने तो माताओं को ऊँचा उठाया है, कभी नीचा बोला ही नहीं। माताएं स्वर्ग का गेट खोलने वाली हैं। पुरुषों में वो ताकत नहीं है, सब पुरुष दुर्योधन-दुःशासन हैं। माताओं की तो कितनी महिमा की है। वन्दे मातरम्। वन्दे पुरुषम् कहा? वन्दना पवित्र की की जाती है। जो पवित्रता के लिए परेशान होती हैं, दुःखी होती हैं उनको कोई पवित्र रहने नहीं देता है। उनके पीछे भगवान आकरके पुरुषार्थ कराता है। ये सन्यासियों की बातें हैं। क्या? स्त्री नरक का द्वार है। ज़हर की पुड़िया है।

जिज्ञासुः बाबा, सीडी चली भी थी अभी आठ-दस रोज पहले।

बाबाः हाँ, तो तुमने समझ नहीं पाई।

Time: 51.29-53.12

Student: Baba, you yourself said now that it is better if the mothers are illiterate; the mothers open the gate of heaven. Then, how are the mothers, packets of poison?

Baba: Did the people of the world say this or did Baba say this? You have become habituated to grasp the topics said by the people of the world. *Arey,* did the people of the world say the mothers (women) as packets of poison or did Baba say this? (Student: We heard in a CD.) Did **Baba** say in the CD that mothers are packets of poison? Why do you blame [on Baba]? You have been blaming Baba for 63 births anyway; why are you blaming [Baba] now, in this birth? In fact, Baba has uplifted the mothers, He never said them to be degraded at all. Mothers open the gates of heaven. Men don't have that much power; all the men are Duryodhan and Dushasan[12]. Mothers have been praised so much. [It is said,] *Vande maataram* (salutation to the mother). Was it said: *Vande purusham* (salutation to men)? The pure ones are worshipped. Those who face difficulties for purity, those who become sorrowful, those who not allowed to remain pure, God comes and enables those very ones to make *purushaarth*. These are words of the *Sanyasis*; what? Woman is a gateway to hell. She is a packet of poison.

Student: Baba that CD was played 8-10 days ago.

Baba: Yes, so you were not able to understand it. …(to be continued.)

Part-4

समयः 53.17-54.32

जिज्ञासुः एन.एस. को स्वर्ग का मॉडल कहेंगे?

बाबाः किसको?

दूसरा जिज्ञासुः एन.एस. को स्वर्ग का मॉडल कहेंगे?

बाबाः वाह, जो मकान बनाया जाता है और उसका फाउण्डेशन खोदा जाता है तो फाउण्डेशन गड्ढे में होता है या ऊपर स्वर्ग दिखाई पड़ता है? (जिज्ञासु - गड्ढे में।) वो तो गड्ढे में है। फाउण्डेशन है। आज मकान जितने भी बनाए जा रहे हैं, चारों तरफ पर्दा लगा देते हैं कि नहीं लगा देते हैं? क्यों लगाते हैं? क्योंकि अभी नई दुनिया का जो मकान बन रहा है वो भी सबकी नज़रों में नहीं आना चाहिए। फाउण्डेशन गुप्त डाला जाता है। जमीन में गड्ढा करके तब ईंट, पत्थर उसमें डाले जाते हैं। और फिर उनकी ठुकाई भी होती है अच्छी तरह से। कौन-कौन टिके रहते हैं और कौन-

[12] Villainous characters in the epic Mahabharata

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

कौन छिटक के इधर-उधर हो जाते हैं? तब नई दुनिया का फाउण्डेशन पड़ता है। फिर पहली मंज़िल दिखाई पड़ेगी। तो अभी फाउण्डेशन पड़ रहा है या स्वर्ग बन रहा है? फाउण्डेशन पड़ रहा है।

Time: 53.17-54.32
Student: Will NS be called a model of heaven?
Baba: What?
Another student: Will NS be called a model of heaven?
Baba: *Wah*! When a building is constructed and [the earth is] dug for its *foundation*, is the *foundation* in a pit or is it visible above like a heaven? (Student: In a pit.) It is in a pit. It is the *foundation*. The houses that are built nowadays, do they cover it from all sides with curtain or not? Why do they cover it? It is because the building of the new world that is being constructed now should not be visible to everyone. A *foundation* is laid in secret. A pit is dug in the land and then the bricks and stones are put in it. And then they are also hammered well [to check:] who remain stable and who scatter here and there. It is then the *foundation* for the new world is laid [and] then the first floor will be visible. So, is the *foundation* being laid now or is heaven being created? A *foundation* is being laid.

समयः 54.49-56.40
जिज्ञासुः बाबा, मुरली में बोला है कि 'माता ओ माता, तु है जग की भाग्य विधाता'। चित्र में विचित्र दिखाई नहीं पड़ रहा।
बाबाः चित्र में विचित्र दिखाई नहीं पड़ रहा है? बाबा बोल रहे हैं? किनको नहीं दिखाई पड़ रहा है? चित्र में विचित्र दिखाई नहीं पड़ रहा है वो बाबा के बच्चों को दिखाई नहीं पड़ रहा है या शूद्रों को नहीं दिखाई पड़ रहा है? (जिज्ञासु - शूद्रों को नहीं दिखाई पड़ रहा है।) शूद्रों को क्यों दिखाई पड़ेगा? (जिज्ञासु - पढ़ाई पढ़ी है...) वो तो शूद्र ही हैं। विकारी दुनिया में बुद्धि पूरी रची-पची है। दिखाई उनको पड़ेगा जो ब्रह्मा की बात मानते होंगे, ब्रह्मा के मुख से निकली हुई पढ़ाई को ध्यान देते होंगे। बाप को पहचानते होंगे। कौनसी माता जग की भाग्यविधाता है? जो नर्क का दरवाज़ा खोलके बैठ जाती है वो या जो स्वर्ग का दरवाज़ा खोलती है वो? (जिज्ञासु - जो स्वर्ग का दरवाज़ा।) फिर? एक में बुद्धि रमी हुई है तो स्वर्ग का दरवाज़ा खोलेगी। अनेकों की बातें सुनती हैं, अनेकों में बुद्धि रमी हुई है, बुद्धि नहीं तन भी रमा हुआ है, मन भी रमा हुआ है, इन्द्रियाँ भी रमी हुई हैं, तो नर्क का दरवाज़ा खोलने के निमित्त बनेंगी या स्वर्ग का दरवाज़ा खोलेंगी? (किसी ने कहा - नर्क।)

Time: 54.49-56.40
Student: Baba, it has been said in the murli: Mother, O Mother! You are the creator of the fortune of the world. The *vicitra* (the formless One) in the *citra* (the one with a form) is not visible.
Baba: Is the *vicitra* in the *citra* not visible? Does Baba say so? Who are unable to see this? If the *vicitra* in the *citra* is not visible; is it not visible to Baba's children or is it not visible to the *Shudras*[13] ? (Student: It is not visible to the *Shudras.*) Why will it be visible to the *Shudras*? (Student: They have studied the knowledge…) They are certainly *Shudras*. Their intellect is

[13] Untouchable; members of the lowest division of the Indo-Aryan society

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

completely busy in the vicious world. It will be visible to those who accept the words of Brahma, those who pay attention to the teachings that were narrated from the mouth of Brahma, those who recognize the Father. Which mothers are the *bhaagya vidhaataa* (creator of fortune) of the world? Are they the ones who open the door to hell or the ones who open the door to heaven? (Student: The ones who open the door to heaven.) Then? If the intellect is busy in the One, they will open the gateway to heaven. If they listen to the words of many, if their intellect is engaged in [the thoughts of] many and not just the intellect, but the body, the mind, the *indriyaan* too are engaged [in others], then will they become the instruments to open the gateway to hell or will they open the gateway to heaven? (Someone said: [The gateway to] hell.)

समयः 56.47-58.20

जिज्ञासुः बाबा, कर्मबंधन के कारण सर्विस के फील्ड में....।

बाबाः हाँ, कर्मबंधन हैं 63 जन्मों का तो कर्मबंधन में ही टाइम देना पड़ेगा। कर्मबंधनों को कूटो। कर्मबंधनसे जो मुक्त हैं इससे साबित होता है कि पूर्व जन्मों में उन्होंने अच्छे कर्म किये हैं। तो इस जनम में स्वतंत्र हैं। माँ-बाप की परवरिश का भी कोई बंधन नहीं है। शरीर का भी ऐसा कोई बंधन नहीं है जो ईश्वरीय सेवा से विलग हो जाएं। मन का भी ऐसा कोई बंधन नहीं है जो मन पागल हो जाए या मन में फितूर उठते रहें। बहुतों का मन ही विरोधी बन जाता है। ईश्वरीय सेवा नहीं करने देता। सारी सुविधाएं उपलब्ध हैं लेकिन मन बंधन में है तो कोई पुरुषार्थ नहीं कर पाते। तो 63 जन्मों के जो पाप कर्मों का कर्मबंधन है जिन-जिन आत्माओं के साथ है उनको टाइम देना पड़ता है। ईश्वरीय सेवा में फिर वो विघ्न आ जाता है। ईश्वर के सहयोगी नहीं बन पाते हैं। जिनके साथ पूर्व जन्मों का कर्मबंधन है उसी में टाइम देना पड़ता है।

Time: 56.47-58.20
Student: Baba, in the field of service, due to the karmic bondages (*karmabandhan*) ….
Baba: Yes, when there are karmic bondages of 63 births then you will have to give *time* for karmic bondages only. Settle the karmic bondages. Those who are free from karmic bondages, it proves that they have performed good deeds in the previous births. So, they are independent in this birth. There is no bondage of taking care of the parents either. There is no bondage of the body either so that they have to separate [from doing] service of God (*iishwariya sevaa*). There isn't any kind of bondage of the mind so that the mind goes mad or conflicts keep arising in the mind. In case of many, the mind itself becomes hostile. It does not allow them to do the service of God. All the facilities are available, but if the mind is in bondage, they are not able to make any *purushaarth* (spiritual effort). So, they have to give *time* to all those souls with whom they have karmic accounts of sinful acts of the 63 births. Thus, an obstacle is created in the service of God. They are unable to become helpful to God. They have to give *time* only to those with whom they have the karmic accounts of previous births.

समयः 58.26-01.00.23

जिज्ञासुः बाबा, साक्षी क्या है?

बाबाः पाठी?

जिज्ञासुः साक्षी क्या है?

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

बाबाः साक्षी कहते हैं - एक होता है पार्शियल कहते हैं ना, पार्शियालिटी करता है। पक्षपात करता है। तो जिसमें पक्षपात न हो। क्या? देह के संबंधी का पक्षपात नहीं है, देह के संपर्की का भी पक्षपात नहीं है, देह के देश का भी पक्षपात नहीं है, कोई प्रकार का पक्षपात नहीं है। सबको आत्मिक दृष्टि से देखता है। सब आत्मा-आत्मा भाई-भाई हैं, तो उसको कहते हैं साक्षी। कहीं लगाव है तो साक्षी नहीं बन सकता।

जिज्ञासुः साक्षी और दृष्टा में क्या अंतर है?

बाबाः साक्षी दृष्टा? साक्षी दृष्टा माने साक्षी होकरके देखे। साक्षी होके वो ही देख सकता है जो अपने को आत्मा समझता है और सबको आत्मिक रूप में देखता है, बिन्दु रूप में देखता है। देह के रूप में नहीं देखता कि ये राजा है ये रंक है, ये ब्राह्मण है, ये भंगी है। इस रूप में नहीं देखता। दृष्टा माने देखने वाला। सबको आत्मिक दृष्टि से देखने वाला।

Time: 58.26-01.00.23
Student: Baba, what is meant by *saakshi*?
Baba: *Paathi*?
Student: What is *saakshi*?
Baba: *Saakshi* means… one [thing] is [to be] *partial*. People say that he shows *partiality*, don't they? He is partial. So, the one who is not partial; what? There is no partiality towards the relatives of the body, there is no partiality towards those who come in contact with the body [and] there is no partiality towards the country to which the body belongs either; there isn't any kind of partiality. He sees everyone with a soul conscious vision. Everyone is a soul, a brother. So, that is called [to be] a *saakshi*. If there is any attachment anywhere, he cannot become *saakshi.*
Student: What is the difference between *saakshi* and *drishtaa*?
Baba: *Saakshi drishtaa*? *Saakshi drishtaa* means the one who sees everything as a detached observer. Only that person, who considers himself to be a soul and sees everyone in the form of a soul, in the form of a point can see [everyone] as a detached observer. He does not see others in the form of a body [and think:] this one is a king, this one is poor, this one is a Brahmin, and this one is a *bhangi* (sweeper). He does not see them in these forms. *Drishtaa* means the observer, the one who observes everyone with a soul conscious vision.

समयः 01.00.26-01.01.27

जिज्ञासुः बाबा, याद और सेवा का बैलेंस कैसे बनाया जाए?

बाबाः जिसको अच्छी याद आएगी वो स्वतः ही सेवा करेगा। उसका वायब्रेशन ही सेवा करता रहेगा। अमृतवेला जिनका सुधर गया, अमृतवेले से संतुष्ट हो गए, अच्छी याद आती रहेगी तो सारा दिन फाउंडेशन अच्छा होने के कारण अच्छी याद आती रहेगी। और सेवा आटोमेटिक होती रहेगी। जिसकी याद होती है उसका संग का रंग लगता है। सबसे ज्यादा सर्विस करने वाला शिवबाबा है। तो उसकी याद में रहेंगे तो हम भी कैसे बन जावेंगे? सर्विसेबुल बन जावेंगे।

Time: 01.00.26-01.01.27
Student: Baba, how can we maintain a balance between remembrance and service?
Baba: The one who remembers [Baba] well will automatically do service. His vibrations themselves will keep doing service. Those who have reformed their [stage at] *amritvelaa*[14], those

[14] Early morning hours before the sunrise

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

who are satisfied with [their stage at] *amritvelaa*, if they remember [Baba] well, then, because of the *foundation* [of the entire day] being good, they will remember well throughout the day. And service will take place automatically. The colour of the company of the one you remember is applied [to you]. The one who does maximum service is Shivbaba. So, if we remain in His remembrance, how will we too become? We will become *serviceable*.

समयः 01.01.31-01.02.34

जिज्ञासुः 77 से 82 तक आल इंडिया टूर पे निकले थे बाबा। बक्सर और आरा और ... में बाबा गए थे उस समय या नहीं गए थे? उसका क्या लक्ष्य है?

बाबाः कहाँ?

जिज्ञासुः बक्सर और आरा और ... बिहार में। जब आल इंडिया टूर में निकले थे उस समय।

बाबाः नहीं।

जिज्ञासुः उस तरफ नहीं गए थे बाबा?

बाबाः नहीं।

जिज्ञासुः इसका क्या (कारण) हो सकता है?

बाबाः अरे, जहाँ ब्रह्माकुमारों का जखीरा होगा, झुण्ड होगा वहाँ पहले जाना चाहिए, पहले बड़े-बड़े पड़ाव तोड़ना चाहिए या छोटी-छोटी जगह जाना चाहिए?

दूसरा जिज्ञासुः 72 से लेके 82 तक बाबा बिहार का दौरा किए थे क्या?

बाबाः नहीं। बिहार में पटना। बिहार में सिर्फ पटना।

Time: 01.01.31-01.02.34
Student: When Baba went on an all India tour from the year 77 to 82, did Baba visit Buxar and Aara and … or not? What was the reason?
Baba: Where?
Student: Buxar and Aara and … in Bihar, when [Baba] was on an all India tour.
Baba: No.
Student: Hadn't Baba gone there?
Baba: No.
Student: What can be its [reason]?
Baba: *Arey*, should we go first to the place where there is a gathering, a group of Brahmakumars, should we break the big camps (gatherings) first or should we go to small places?
Another student: Did Baba visit Bihar in the period from 72 to 82?
Baba: No. [Baba visited] Patna in Bihar; only Patna in Bihar.

समयः 01.02.38-01.04.23

जिज्ञासुः स्वाधीन और स्वाधीनता में क्या अंतर होता है?

बाबाः स्वाधीन होता है मनुष्य। स्व माने अपने आधीन। किसी के आधीन नहीं। किसी की उसको दरकार नहीं। उसे कहते हैं स्वाधीन। और स्वाधीनता ये तो गुण हो गया। हरेक को स्वाधीनता चाहिए। पराधीनता किसी को नहीं चाहिए। पराधीन सपनेहु सुख नाहि। जो पराधीन होता है वो

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

दुःखी ही दुःखी होता है। तो सच्ची स्वाधीनता बाबा आकरके सिखाते हैं। राजा किसी के आधीन नहीं होता। ये राजाई बाबा आकरके देते हैं। और जो भी मनुष्य मात्र हैं वो सब पराधीन बनाने वाले हैं। पराधीनता सिखाते हैं। पर के अधीन रहो। एक शिव ही है जो सदैव स्वचिंतन, स्वस्थिति में स्थित रहता है। वो ही आकरके स्वाधीनता सिखाता है। जो 84 जन्मों में थोड़ा भी पराधीन रहे होंगे, एक जन्म भी पराधीन होकरके रहे होंगे तो दूसरों को पराधीन बनावेंगे या स्वाधीन बनावेंगे? पराधीन ही बनावेंगे।

Time: 01.02.38-01.04.23
Student: What is the difference between *swaadhiin* and *swaadhiintaa*?
Baba: A human being is *swaadhiin* (independent). *Swa* means to be a subject of the self. He is not a subject of anyone. He does not need anyone. He is called *swaadhiin*. And *swaadhiintaa* is a quality. Everyone wants to be independent (*swaadheenta*). Nobody wants to be dependent [on others] (*paraadhiintaa*). *Paraadhiin sapnehu sukh naahi* (the one who is dependent does not remain happy even in the dreams.) The one, who is dependent, is always sorrowful. So, **Baba** comes and teaches true *swaadhiintaa*. A king is not dependent on anyone. Baba comes and gives this kingship. All the other human beings make us dependent (*paraadhiin*). They teach us to be dependent. [They teach:] Remain dependent on others. It is only Shiva who always remains constant in thinking about the self (*swachintan*), in the stage of the self (*swasthiti*). He alone comes and teaches *swaadhiintaa.* Those who will have been dependent even to the slightest extent in the 84 births, those who will have been dependent even for one birth; will they make others dependent or independent? They will definitely make [others] dependent.

समयः 01.04.28-01.04.50

जिज्ञासुः बाबा, आत्मा को अपने गुण, श्रेष्ठता के अधीन नहीं होना चाहिए। अपने गुण श्रेष्ठता के अधीन।

बाबाः अपने गुण को पहचाने न पहले। पहले वो अपने गुण को पहचाने। और वो गुण कितनी परसेन्टेज में ये भी पहचाने।

Time: 01.04.28-01.04.50
Student: Baba, should the soul not be dependent on its virtues, qualities?
Baba: It should realize its virtues first, should it not? It should realize its virtues at first. And it should also realize the *percentage* of those virtues present [in the soul].

समयः 01.04.56-01.05.10

जिज्ञासुः बाबा कहे और वर्से के अधिकारी बन गए।...

बाबाः बाबा दिल से कहे या ऊपर-ऊपर से बाबा कहें? दिल से कहें तो अधिकारी बनें।

Time: 01.04.56-01.05.10
Student: We say Baba and become entitled to the inheritance…
Baba: Should you say Baba from the heart or superficially? You will become entitled [to the inheritance] if you say from the heart. (Concluded)

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info